अलभ्य श्रीगायत्रीकवचम्

```
{॥ अलभ्य श्रीगायत्रीकवचम् ॥}
विनियोगः
ॐ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य ब्रह्माविष्णुरुद्राः ऋषयः ।
ऋग्यजुःसामाथर्वाणि छन्दांसि । परब्रह्मस्वरूपिणी गायत्री देवता ।
भूः बीजम् । भुवः शक्तिः । स्वः कीलकम् । var सुवः कीलकम् ।
चतुर्विंशत्यक्षरा श्रीगायत्रीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।
ध्यानं
वस्त्राभां कुण्डिकां हस्तां, शुद्धनिर्मलज्योतिषीम् ।
सर्वतत्त्वमयीं वन्दे, गायत्रीं वेदमातरम् ॥
```

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलैश्छायैः मुखेस्रीक्षणैः। युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्॥

गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशां शूलं कपालं गुणैः। शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥

कवच पाठः

ॐ ॐ ॐ ॐ भूः ॐ ॐ भुवः ॐ ॐ स्वः ॐ ॐ त ॐ ॐ त्स ॐ ॐ वि ॐ ॐ तु ॐ ॐ र्व ॐ ॐ रे ॐ ॐ ण्यं ॐ ॐ म ॐ ॐ गों ॐ ॐ दे ॐ ॐ व ॐ ॐ स्य ॐ ॐ धी ॐ ॐ म ॐ ॐ हि ॐ ॐ धि ॐ ॐ यो ॐ ॐ यो ॐ ॐ नः ॐ ॐ प्र ॐ ॐ चो ॐ ॐ द ॐ ॐ या ॐ ॐ त ॐ ॐ। ॐ ॐ ॐ ॐ भृः ॐ पातु मे मृलं चतुर्दलसमन्वितम । ॐ भूवः ॐ पातु मे लिङ्गं सज्जलं षट्दलात्मकम् । ॐ स्वः ॐ पातु मे कण्ठं साकाशं दलषोडशम्। var सुवः ॐ त ॐ पात् मे रूपं ब्राह्मणं कारणं परम्। ॐ त्स ॐ ब्रह्मरसं पातु मे सदा मम। ॐ वि ॐ पातु मे गन्धं सदा शिशिरसंयुतम्। ॐ तु ॐ पातु मे स्पर्शं शरीरस्य कारणं परम्। ॐ र्व ॐ पातु मे शब्दं शब्दविग्रहकारणम्। ॐ रे ॐ पातु मे नित्यं सदा तत्त्वशरीरकम्। ॐ ण्यं ॐ पातु मे अक्षं सर्वतत्त्वैककारणम्। ॐ भ ॐ पातु मे श्रोत्रं शब्दश्रवणैककारणम् । ॐ र्गो ॐ पातु मे घ्राणं गन्धोत्पादानकारणम् । ॐ दे ॐ पातु मे चास्यं सभायां शब्दरूपिणीम्। ॐ व ॐ पातु मे बाह्युगलं च कर्मकारणम्। ॐ स्य ॐ पातु मे लिङ्गं षट्दलयुतम् । ॐ धी ॐ पातु मे नित्यं प्रकृति शब्दकारणम । ॐ म ॐ पातु मे नित्यं नमो ब्रह्मस्वरूपिणीम्। ॐ हि ॐ पातु मे बुद्धिं परब्रह्ममयं सदा। ॐ धि ॐ पातु मे नित्यमहङ्कारं यथा तथा। ॐ यो ॐ पातु मे नित्यं जलं सर्वत्र सर्वदा।

ॐ यो ॐ पातु मे नित्यं जलं सर्वत्र सर्वदा।
ॐ नः ॐ पातु मे नित्यं तेजःपुञ्जो यथा तथा।
ॐ प्र ॐ पातु मे नित्यमनिलं कायकारणम्।
ॐ चो ॐ पातु मे नित्यमाकाशं शिवसन्निभम्।
ॐ द ॐ पातु मे जिह्वां जपयज्ञस्य कारणम्।
ॐ यात् ॐ पातु मे नित्यं शिवं ज्ञानमयं सदा।
ॐ तत्त्वानि पातु मे नित्यं, गायत्री परदैवतम्।
कृष्णं मे सततं पातु, ब्रह्माणि भूर्भुवः स्वरोम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममाराती यतो निदहाति वेदाः। स नः पर्षदित दुर्गाणि विश्वा नावेवं सिन्धुं दुरितात्यिग्नः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। ऊर्वारिकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

ॐ नमस्ते तुरीयाय सर्शिताय पदाय परो रजसेऽसावदों मा प्रापत ॥

कवचसहिता चतुष्पादगायत्री सम्पूर्णा ॥

Encoded by aspundir Singh

Proofread by PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated त्oday

http://sanskritdocuments.org

```
Gayatri Kavacham 2 ( Alabhya ) Lyrics in Devanagari PDF

% File name : gAyatrIkavachaalabhya.itx

% Location : doc\_devii

% Language : Sanskrit

% Subject : philosophy/hinduism/religion

% Transliterated by : aspundir Singh

% Proofread by : PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

% Latest update : June 23, 2015

% Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

% Site access : http://sanskritdocuments.org

%

% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study

% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of

% any website or individuals or for commercial purpose without permission.

% Please help to maintain respect for volunteer spirit.

%
```

We acknowledge well-meaning volunteers for <u>Sanskritdocuments.org</u> and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.

Please check their sites later for improved versions of the texts.

This file should strictly be kept for personal use.

PDF file is generated [December 11, 2015] at Stotram Website